गुरुवाणी

जब आप किसी से कुछ बोलते हैं, कहते हैं तो ऐसा करने के पूर्व आप विचार कर लें कि आप क्या कहने जा रहे हैं, क्या बोलने जा रहे हैं, कौन से शब्द इस्तेमाल करने जा रहे हैं और उनका स्वयं आप पर क्या प्रभाव पड़ेगा? ऐसा विचार कर लेने से आप बहुत सी परेशानियों से बचे रहेंगे।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१५, अंक १७, वाराणसी। मंगलवार १५ सितम्बर २०१५ ई० सहयोग राशि ४.२५

सद्गुरु

गु (अंधकार) रु (प्रकाश) यानी अंधकार से प्रकाश की ओर गति कराने वाले मार्गदर्शक शक्तिपुँज को ही गुरु शब्द से नवाजा गया है। 'तमसो माँ ज्योर्तिगमय' तथा 'असतो माँ सद्गमय' की चाह एक जिज्ञासु को आकर्षित कर गुरु के आश्रय तक पहुँचा देती है। यह नितान्त सत्य है कि बालक या व्यक्ति का परिवार ही प्रथम पाठशाला होता है यानी शिशु अपने प्रारम्भिक अवस्था में अपने माता-पिता अपने पालन-पोषण करने वाले से ही अचेतन मन से सीखते हुए शनैः शनैः सयाना होता है तथा उसे भौतिक ज्ञान हेतु स्कूल, कालेज में शिक्षण हेतु जाना होता है, जहाँ उसका विभिन्न विषयों में पारंगत गुरुओं से साक्षात्कार होता है तथा सबकी विशेषताओं के अर्क को लेकर शिष्य अपने जीवन संग्राम में आगे बढ़ता है जहाँ उसे अब मार्गदर्शन हेतु, जीवन दर्शन हेतु एक सद्गुरु यानी जीवन पर्यन्त अपनी छत्रछाया प्रदान करने वाली शक्ति की आवश्यकता होती है। व्यक्ति को जीवन में सदैव प्रकाश मिलता रहे यह उसी प्रकार आवश्यक एवं अपरिहार्य है जैसे एक पौधे को कितना ही खाद पानी उर्वरा भूमि क्यों न उपलब्ध हो परन्तु सूर्य के प्रकाश के अभाव में उसका विकास सम्भव नहीं है। उद्भव होने के बावजूद वह पुष्पित, पल्लवित नहीं हो सकता जब तक कि आवश्यक ऊष्मा उसे न प्राप्त हो। ठीक उसी प्रकार हमारे जीवन में सद्गुरु का अविर्भाव होना जाग्रत कर हमें सन्मार्ग की ओर अग्रसर करके सद्विवेक की वृद्धि कर देता हैं, जिससे हमारा तन, मन अवांछनियता को छोड़कर वांछनीय मार्ग की ओर अग्रसर होता जाता है। यद्यपि यह भी एक शर्त है कि शिष्यत्व का तत्व सुपात्रता ग्रहण करना है क्योंकि स्वर्णकार स्वर्ण धातु से ही स्वर्णाभूषण का निर्माण करेगा। ताँबा या अन्य धातु को उसके समरूप दूसरे कार्यों में लाया जा सकता है, अतः जो जैसी पात्रता धारण करता है। गुरु की तद्नुसार ही उस पर कृपा बरसती है। समर्थ गुरु सदैव ही अपने योग्यतम शिष्य की खोज में रहता है तथा बड़े ही मुश्किल से शिवाजी, विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी दयानन्द जैसे शिष्य प्राप्त होते है जिसके प्रभाव से लाखों, करोड़ों लोगों का जीवन निखर कर धन्य हो जाता है। धन-दौलत, मान-मर्यादा, पारिवारिक सुख आदि प्रदान करना तो सद्गुरु के लिए तुच्छ सा है, इसके सापेक्ष्य सद्गुरु के समक्ष यदि हम अपनी पात्रता सिद्ध कर दें तो वे हमें अलौकिक, अध्यात्मिक सुख से भर देते हैं जिसका वर्णन शब्दों में किया जाना संभव ही नहीं है। ''सुखे-दुखे समेकृत्वा लाभालाभौ जयाजयः'' की स्थिति में शिष्य अपने को पाकर इस जीवन में एक स्थिरता का अनुभव कर कृतार्थ होता है। सांसारिक या भौतिक सुख से कभी आत्मिक त्रुष्टि नहीं होती क्योंकि आत्मिक प्यास की तभी तुष्टि होती है जब हमें वास्तव में जल की प्राप्ति हो, केवल जल का वर्णन या जल का चित्र देखकर हमारे अन्दर की प्यास कभी बुझ ही नहीं सकती। इस प्रकार व्यक्ति अन्ततः अपना जीवन-समाप्त कर लेता है।

शिष्यत्व के लिये आवश्यक तत्व

१. विश्वास– अन्दर से अभ्यन्तर से गुरु वाणी के प्रति अडिग अटूट आस्था, यानी तन, मन, धन से विश्वास को बनाये रक्खें तथा अपने को निर्मल, स्वच्छ एवं सुपात्र बनाकर रक्खें।

२. पराक्रम हेतु उद्यत होना पड़ेगा–

बिना रगड़े चन्दन भी सुगन्ध नहीं बिखरेता, विभूति को विश्वास के साथ ही ललाट में धारण करने से परिश्रम करने की शक्ति में सम्बर्द्धन होता है, विराट ऊर्जा की प्राप्ति होती है जिससे हमारे पराक्रम में वृद्धि होती जाती है।

३. जानने और मानने में अन्तर है–

गुरु की वाणी को आँख मूँदकर शत-प्रतिशत अनुपालन करने में चमत्कारिक फल की प्राप्ति होती है। बशर्ते कि लाभ हम स्वयं इसी शरीर एवं आत्मा से उठावें। आई.ए.एस. का वर्णन करने मात्र से कोई विद्यार्थी आई.ए.एस. नहीं बन जाता। न तो केवल उनका व्याख्यान सुनकर ही, बल्कि व्यक्ति को तो तदनुरूप आचरण एवं समस्त गुणों को अपने कर्त्तव्य के द्वारा धारण करना पड़ेगा। कबीर दास जी ने गुरु महिमा को बताते हुए कहा हैं—

तीरथ नहाये एक फल,
संत मिले फल चार।
सद्गुरु मिले अनन्त फल,
कहत कबीर विचार।।

इसी प्रकार तंत्र, मंत्र, जप, तप, ध्यान, पूजा-पाठ आदि के मूल में गुरु कृपा ही हैं। **ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः परम्। मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।।**

गुरु जब शिष्य को अपनाता है तो उसकी पूरी जिम्मेदारी, उसके जीवन के सारे क्रिया कलापों का नियमन वे स्वयं ही करने लगते हैं। शिष्य के पूर्व जन्म कृत दोष कलुष, कल्मष को भी गुरु तिरोहित कर, परिष्कार कर शिष्य का काया कल्प करते हैं। गुरु का थोड़ा सा भी सान्निध्य उसे प्रकाशित कर उसके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन कर देता हैं। सच्चे गुरु सदैव ही ब्रह्मलीन रहते हैं, संतृप्त रहते हैं। वे सांसारिक, राग, द्वेष, झंझावातों से स्वयं अप्रभावित रहकर शिष्य के आध्यात्मिक पथ को आलोकित करते रहते हैं। इसीलिये गुरु सेवा को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। गुरु की सेवा का अर्थ कोई स्वार्थ अथवा गुरु के शारीरिक सेवा से सम्बन्धित नहीं है बल्कि स्वयं को गुरु के समक्ष प्रस्तुत करने में ही अपने को सतत सुधारना पड़ता है। यही सबसे बड़ा लाभ है। शिष्य गुरु के भक्ति को अगर अभ्यन्तर में समाहित कर लेता है तो वह स्वयमेव, भय, दुःख, बाधा आदि से विरत हो जाता है। जीवन मार्ग में कोई बाधायें मार्ग अवरुद्ध नहीं कर सकती। बल्कि सतत मार्ग प्रशस्त होता जाता है। जैसे माँ के अंक में अबोध बालक या शिशु बड़े ही सुख से निर्द्वन्द्व होकर गाढ़ी नींद सोता है ठीक उसी प्रकार गुरु के अंक में शिष्य को आन्तरिक, अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होती है जिससे उसे मानसिक शान्ति व अपरिमित सुख मिलता है। शिष्य के लिये सुपात्र होना मात्र उसके पास श्रद्धा एवं विश्वास का खजाना होता है। महर्षि गौतम के शिष्य सत्यकाम पतिहीना जाबाली के पुत्र थे जिन्हें अपने पिता का गोत्र ज्ञात नहीं था। बालक सत्यकाम की सत्यनिष्ठा से प्रभावित होकर महर्षि गौतम ने उन्हें अपने अंक में भर लिया और ब्रह्मज्ञान की दीक्षा दी। इसी प्रकार गुरुभक्त एकलव्य के गुरु द्रोणाचार्य, भक्त ध्रुव के गुरु महर्षि नारद एवं बालक प्रह्लाद की श्रद्धा, विश्वास ने ही अपने समक्ष ईश्वर को प्रकट किया। राजा दिलीप का अपने गुरु वशिष्ठ के प्रति अगाध श्रद्धा एवं राजा जनक का अपने गुरु अष्टावक्र के प्रति

शेष पृष्ठ दो पर

भयरहित जीवन

प्रकृति ने मनुष्य को अभय जीवन जीने की प्रवृत्ति प्रदान किया है। यद्यपि पूर्व की अपेक्षा आज का अधुनातन मानव तकनीकी युग के निरन्तर विकास के बावजूद अपने आत्मानन्द को भय के प्रवाह में झोंक रक्खा है। हालांकि यह सत्य है कि मानव के नियंत्रण में भविष्य नहीं है, इस ज्ञान के बावजूद मानव अपने मस्तिष्क के ज्वारभाटा के ही कारण नैराश्य एवं दु:ख की चादर ओढ़ लेता है। मानव मस्तिष्क में दो तत्व बहुत ही सक्रियता से कार्यरत रहते है एक सकारात्मक एवं दूसरा नकारात्मक। जैसे ही हम कोई रचनात्मक अथवा वीरोचित कार्य करने की ठानते हैं तो स्वभावत: बाधायें चट्टान की तरह रास्ते में खड़ी दिखायी देती है तथा तत्काल नकारात्मक तत्व प्रभावी हो जाता है। यहाँ तक कि वह सकारात्मक पहलू पर हावी भी हो जाता है, फलस्वरूप कार्य करने की इच्छाशक्ति जबाब देने लगती है। परन्तु यदि सकारात्मक तत्व की जड़ें मजबूत हैं तो नकारात्मक तत्व यानी नैराश्य, उदासी अनिच्छा का वातावरण शीघ्र ही छँटता नजर आता है।

नकारात्मकता एक तरह से अनिच्छित खर-पतवार की तरह बिना प्रयास के ही उपजने लगती हैं और कहीं इसकी जड़े गहरी हो गई हैं तो थोड़ा और समय सफाया करने में लग सकता है। परन्तु धैर्य एवं निरन्तर प्रहार से इस पर निश्चित रूप से विजय पाया जा सकता है।

भय एक मानसिक विकार है। आलस्य, प्रमाद ही भय का प्रमुख कारण है। गुरु की उपस्थिति सदैव हृदय में बनाये रखने से भय का लेश भी छूने नहीं पायेगा तथा मानव में साहस, पुरुषार्थ का बीजारोपण स्वयमेव हो जाता है। भारतीय ऋषियों ने आत्मज्ञान को भय निवारण का एकमात्र उपाय बताया है जो अपने को सब में तथा सबको अपने में देखता है, वही अभेद है, सर्वात्म भाव जगने से उसे इस बात का बोध हो जाता है कि दूसरे से घृणा करना, अपने से घृणा करना है। जिसकी वासनायें जीते जी मर गयीं वह अभय की स्थिति को प्राप्त कर लेता है।

मानव का सर्वप्रिय उसका प्राण होता है यानी मृत्यु का भय सर्वाधिक होता है जबकि मृत्यु भी अपरिहार्य है, सबके समक्ष वह आती ही आती है फिर भी उसका भय जीवन भर पीछा नहीं छोड़ता, जबकि यह पूर्णत: भ्रामक होता है। भय धुएँ के पहाड़ की तरह होता है, हम ज्यों-ज्यों इससे भयभीत होते हैं, त्यों-त्यों यह विशालता प्रकट करता है परन्तु ज्यों ही हम सहर्ष सामना करने को उद्यत हो उठते हैं। उसके तह में जाते हैं तो वह जलते कपूर की तरह गायब होने को बाध्य होता है। जीवन एवं मृत्यु तो जीवन के दो प्राकृतिक पहिये हैं। अत: मृत्यु के भय को हमेशा ज्ञान से फटकारते रहने में ही भलाई है। एक सुविख्यात कवि ने मृत्यु को स्वागत योग्य बताते हुए कहा है कि—

निर्भय स्वागत करो मृत्यु का, मृत्यु है एक विश्राम स्थल।
जीव जहाँ से फिर चलता है धारण कर नवजीवन संबल।।
मृत्यु एक सरिता है जिसमें श्रम से कातर जीव नहाकर।
फिर नूतन धारण करता है काया रूपी वस्त्र बहाकर।।

यानी शरीर को वस्त्र के समान माना गया है।

भगवान बुद्ध का भी कथन है कि मनुष्य अपने भीतर की दुर्बलता से ही भयभीत रहता है जो आत्मनिष्ठ होकर उदात्त भावनाओं को अपना लिया वह निर्भय जीवन यापन करता है।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

सद्गुरु

विश्वास उन्हें अपरिमित ऊँचाई पर ले गया। अध्यात्मिक गुरु शिष्य पर प्रथम दृष्ट्या नेत्रपात करके ही उसके भूत, भविष्य, वर्तमान एवं कई जन्मों के फलाफल, उसकी मनोभूमि, दशा का भी विचार निर्धारण कर लेते हैं।

सांसारिक शिक्षक और सद्गुरु में आकाश, पाताल का अन्तर है। शिक्षक का दायित्व औपचारिक शिक्षा देना है। जबकि सद्गुरु दीक्षित करते हैं यानी आत्मबोध कराते हैं। वे शिष्य के ऊर्जा के महाकेन्द्र होते हैं। जिससे शिष्य सदा ऊर्जान्वित एवं चलायमान बने रहते हैं।

परन्तु आजकल विडम्बना ही है कि नकली नोट की तरह आडम्बरी, पाखण्डी, कथित ठग गुरु शब्द को ही कलंकित कर रहे हैं। आये दिन दूरदर्शन के चैनलों पर प्रमुखता से ऐसे समाचार प्रचारित-प्रसारित होते रहते है। जिसमें पढ़ी लिखी परन्तु अंधी जनता को ये तथाकथित पाखण्डी नाना प्रकार का स्वांग कर उन्हें अपने मायाजाल में फाँस लेते हैं तथा उनके अर्थ का दोहन करना एवं शिष्य का सर्वनाश करना ही उनका अभीष्ट होता है। ये कलयुगी निशाचर मुनि का वेष बनाकर छल छद्म के द्वारा श्रद्धालुओं की भावनाओं को कुचल डालते हैं तथा जब तक इनका भांडा फूटता है तब तक काफी देर हो चुकी होती है। दूसरी तरफ ये प्रपंची लाखों-करोड़ों, व्यक्तियों की आस्था की हत्या कर दिन दूनी रात चौगुनी धनार्जन कर अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं। अत: कालनेमियों से भी सतत सावधान रहने में ही अपनी भलाई है। यद्यपि ऐसे दृष्टान्त पुराणों में भी मिलते हैं। जैसे साधु के वेष में ही रावण द्वारा सीता हरण, भगवान कृष्ण के द्वारा पूतना-वध, बकासुर-वध किया गया।

सद्गुरु एवं शिष्य के मध्य स्वार्थ एवं अहम का कोई स्थान नहीं है। साथ ही गुरु एवं शिष्य का सम्बन्ध संस्कार जन्य ही होता है। शेरनी का शावक उसी के गुण, धर्म के अनुरूप, गाय का बछड़ा एवं अन्यान्य जीवों के पाल्य उन्हीं की प्रकृति के होते हैं ठीक उसी प्रकार सद्गुरु की शिष्य मण्डली अपने गुरु के अनुरूप ही गुण, धर्म अपनाता है। रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानन्द को खोज कर शिष्य बनाया। यद्यपि विवेकानन्द भी अपने सद्गुरु से मिलने से पूर्व कई गुरुओं के पास गये परन्तु चुम्बकत्व शक्ति का प्रभाव जब उन्हें प्रभावित किया तो उनका हृदय संतृप्त हो गया। चाणक्य को ही चन्द्रगुप्त मौर्य की काफी खोज करनी पड़ी थी।

अघोराचार्य बाबा कीनारामी परम्परा के अन्तर्गत भी शिष्य एवं गुरु सम्बन्ध की अक्षुणता दिनोदिन गहरी होती जा रही है। शिष्य के प्रति औपचारिकता नहीं के बराबर है। उसे तो गुरु के सान्निध्य में एक अपनापन, अपनत्व का बोध होता है जैसे सद्गुरु के रूप में सच्चा अभिभावक माता-पिता ही माँ गुरु का रूप धारण कर स्नेहासिक्त कर रहे होते हैं। श्रद्धालु/शिष्यगण एक व्यापक परिवार की भाँति एक ही माले के मनकों की तरह जुटे एवं एकजुट रहते हैं। यहाँ तक की क्रींकुण्ड स्थल के स्वयंसेवक भी अघोर परिवार के सदस्यों की भाँति अहर्निश

शेष पृष्ठ तीन पर

लोलार्क षष्ठी महोत्सव वर्ष 2015

धर्म बन्धुओं,

अपार हर्ष के साथ सूचित किया जा रहा है कि अघोराचार्य महाराजश्री बाबा कीनाराम जी के षष्ठी समारोह के अवसर पर प्रतिवर्ष मनाये जाने वाला '**लोलार्क षष्ठी महोत्सव**' आगामी दिनांक 19 सितम्बर 2015 ई0, दिन शनिवार को अघोर गुरुपीठ बाबा कीनाराम स्थल, क्रीं कुण्ड, रविन्द्रपुरी (शिवाला), वाराणसी में परम्परागत ढंग से ससमारोहपूर्वक मनाया जायेगा।

इस पुनीत अवसर पर आप सभी अघोर भक्त सादर आमंत्रित हैं।

–: कार्यक्रम :–

1. प्रातःकालीन आरती के बाद श्रमदान एवं सफाई कार्य तथा प्रभातफेरी।
2. प्रातः 8 बजे से पूज्य पीठाधीश्वर जी द्वारा पूजन, अर्चन।
3. प्रातः 9.30 बजे से श्रद्धालुओं द्वारा पूज्य पीठाधीश्वर जी का दर्शन-पूजन।
4. दोपहर 12 बजे से प्रसाद वितरण का कार्यक्रम।
5. सायंकाल 4 बजे से गोष्ठी एवं पूज्य पीठाधीश्वर जी का आशीर्वचन।
6. सायंकाल आरती 7.30 बजे से प्रारम्भ।
7. रात्रि 8 बजे से सांस्कृतिक आयोजन।

सद्गुरु

द्वितीय पृष्ठ का शेष

अपनी अन्तर्रात्मा से अनुप्रेरित होकर गुरु की सेवा में तत्परता से लगे रहते हैं। उनके लिये आश्रमवासियों की सेवा आगन्तुकों का पुरुषाहाल लेना गुरु सेवा का ही भाग होता है। प्रत्येक श्रद्धालु सांस्कृतिक दृष्टान्त के रूप में धरोहर सिद्ध होते हैं क्योंकि गुरु की कृपा से उनमें वैचारिक परिवर्तन हो गया होता है। यदि किञ्चित कारणों से अघोर गुरु के शिष्य में कोई कमी रह जाती है तो उनका पुन: परिमार्जन, प्रशिक्षण कराया जाता है। जिससे उनके जीवन की दशा व दिशा दोनों बदल जाती है। इस प्रकार अयोग्य शिष्य को भी गुरु बड़े जतन से योग्य बनाकर उसे समाज के लिये लाभकारी बनाते हैं। वे भली भाँति अवगत रहते हैं कि शिष्य को क्या और कब, कितना प्रदान किया जाय? गुरु शिष्य को मनचाहा फल यदि नहीं भी देते हैं तो इसका मतलब यह है कि उसके लिये यह अनुकूल नहीं था। इसी विधान से गुरु अपने शिष्यों की रक्षा करते हैं। आज गुरु की आवश्यकता और अधिक बढ़ गयी है क्योंकि समाज में उच्चशृंखलता, निरंकुशता, विवाद बढ़ता जा रहा है। अत: इन सभी विकारों से सर्वथा मुक्त कर गुरु अपने शिष्य को निर्विकार रूप से अनुभूति कराकर उसे मानव धर्म पर चलने में समर्थ बना देते हैं। अब प्रश्न यह है कि सद्गुरु की पहचान कैसे करें?

जाने बिन न होहिं परतीति, बिन परतीति होहिं नहीं प्रीति।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने उपरोक्त दृष्टान्त देकर गुरु की पहचान बतायी है। वर्तमान समय में सद्गुरु की पहचान का बड़ा ही सरल उपाय है। ''**जब आप स्वयं से हार जाये यानि व्यक्ति का आत्मबल, पुरुषार्थ, बुद्धिबल, साहस, सामर्थ्य समाप्त हो जाय तो हृदय से आपकी पुकार आपके गुरु को दौड़ा देगा।**'' लगेगा जैसे कि वे आपके करुण पुकार की प्रतीक्षा कर रहे हों। जब गज ने आर्त्त होकर ग्राह के जबड़े से आक्रान्त होकर भगवान् कृष्ण को पुकारा तब वे दौड़े चले आये। यानी जहाँ से हम आप शक्ति शून्य हो जाते हैं वहीं से सद्गुरु कृपा प्रारम्भ होती है। जैसे कोई माँ अपने बच्चे को उंगुली पकड़ाकर इस ध्येय से चलाती है कि बच्चा शीघ्रातिशीघ्र अपने पैरों पर खड़ा होकर चल सके। परन्तु जैसे ही बच्चा डगमगा कर गिरने को होता है वात्सल्य मयी माँ आनन फानन में बच्चे को गोद में उठाकर दुलार पुचकार कर पुन: शक्ति से भरकर उसे सन्मार्ग की ओर उन्मुख कर देती है। ठीक यही स्थिति गुरु के साथ है। घोषित रूप से अघोराचार्य बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी अपने शिष्यों को उद्बोधित करते हुए कहते हैं ''**निर्भीक होकर अपने कर्त्तव्य को करते रहें। गुरु आपके साथ हैं कुछ भी गड़बड़ नहीं होगा।**'' परन्तु उक्त वाक्य में शिष्य का अटूट विश्वास होना अपरिहार्य है।

गुरु के महत्व को बताने के लिये स्वयं भगवान शंकर के द्वारा श्रीगुरुगीता सृजित किया गया है। जिसमें कुछ दृष्टान्त उद्धृत हैं।

गुरुपादांबुजं स्मृत्वा जलं शिरसि धारयेत्।
सर्वतीर्थावगाहस्य संप्राप्नोति फलं नरः।।

श्रीगुरुदेव के चरण कमलों का स्मरण करके सिर पर जल धारण करने (उड़ेलने) से मनुष्य सभी तीर्थों में स्नान करने का पुण्य फल प्राप्त कर लेता है।

अज्ञानमूलहरणं जन्मकर्मनिवारणम्।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं गुरुपादोदकं पिबेत्।।

अज्ञानता को जड़ से उखाड़ फेंकने वाले, जन्म जनित कर्मों की कठिनाइयों का या सांसारिक आपत्तियों का निराकरण करने वाले एवं ज्ञान वैराग्य अर्थात् अनासक्ति की सिद्धि के लिए श्रीगुरुदेव के चरणोदक का पान करना चाहिए।

गुरोः पादोदकं पीत्वा गुरोरूच्छिष्टभाजनम्।
गुरुमूर्तेः सदा ध्यानं गुरुमन्त्रं सदा जपेत्।।

श्रीगुरुदेव के चरणामृत को पीकर, गुरु देव के छोड़े हुए प्रसाद को ग्रहण कर हमेशा श्रीगुरुदेव की मूर्ति का ध्यान करते हुए गुरु मंत्र का सदा जप करें।

काशीक्षेत्रं तन्निवासो जाह्नवी चरणोदकम्।
गुरुविश्वेश्वरः साक्षात् तारकं ब्रह्म निश्चितम्।।

श्रीगुरुदेव का निवास स्थान काशी के समान पवित्र है। उनके चरणोदक गंगाजल स्वरूप पाप हारणी हैं। श्रीगुरुदेव निश्चित रूप से विश्वेश्वर स्वरूप तारक ब्रह्म हैं।

गुरोः पादोदकं यत्तु गयाऽऽसौ सोऽक्षयो वटः।
तीर्थराजः प्रयागश्च गुरूमूर्त्यै नमो नमः।।

श्रीगुरुदेव का चरणोदक विष्णुपादुका तीर्थ गया, अक्षयवट तीर्थ एवं संगम तीर्थ प्रयाग राज के तरह फल-प्रदान करने वाला है। अत: परब्रह्म के सजीव मूर्ति श्री गुरुदेव को बार-बार प्रणाम।

गुरुमूर्तिं स्मरेन्नित्यं गुरुनाम सदा जपेत्।
गुरोराज्ञां प्रकुर्वीत गुरोरन्यन्न भावयेत्।।

गुरु के मुखार बिन्द में स्थित ''ज्ञान ब्रह्म'' को उनकी ही कृपा से प्राप्त किया जा सकता है। अत: गुरु का ध्यान हमेशा करते रहें, जैसे कुलवधू अपने पति का ही ध्यान करती रहती है।

स्वाश्रमं च स्वजातिं च स्वकीर्तिंपुष्टिवर्धनम्।
एतत्सर्वं परित्यज्य गुरोरन्यन्न भावयेत्।।

अपना आश्रम, अपनी जाति, अपनी कीर्ति, अपनी ताकत और अपना संवर्धन आदि सबको छोड़कर, गुरु का ही ध्यान करना चाहिए तथा गुरु को छोड़कर अन्य किसी की भावना नहीं करनी चाहिए। चूंकि गुरु-कृपा के सामने सब व्यर्थ है।

इस प्रकार गुरु के प्रति प्रीति, गुरु चरण में अनुराग हमारा दुश्मनों से सदैव रक्षा करता है। बाह्य दुश्मन से अधिक खतरनाक अपने अन्दर के दुश्मन काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, दम्भ इत्यादि है।

अघोराचार्य बाबा कीनाराम का 416वाँ ''प्राकट्य दिवस'' कुटिया रामपुरमांझा, जनपद-गाजीपुर

अघोर सेवा मण्डल के तत्वावधान में ग्राम-रामपुर मांझा, बाबा कीनाराम कुटिया के परिसर में दिनांक 11 सितम्बर 2015 दिन शुक्रवार को एक भव्य कार्यक्रम एवं भंडारा कर बाबा कीनाराम जी का 416वाँ प्राकट्य दिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। ग्रामीण अंचलों से आये हजारों श्रद्धालुओं के जयघोष के मध्य अघोर गुरुओं के समाधियों का विधिवत पूजा अर्चना एवं आरती की गई। दोपहर से भव्य पण्डाल में छात्राओं के भजन, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं विविध वक्ताओं द्वारा उद्बोधन ने भक्तों को एकाग्रचित बनाये रखा एवं सम्पूर्ण वातावरण शिवमय बना रहा। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री रामआश्रय सिंह, एडवोकेट के द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में मंच पर उपस्थित प्रो0 मधु सिंह के पूर्व अन्य वक्ताओं ने बाबा कीनाराम जी के समाज सुधार एवं चमत्कारिक घटनाओं की चर्चा की तथा अन्त में धन्यवाद ज्ञापन ब्रह्मनिष्ठ श्री रणजीत सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता, गाजीपुर द्वारा किया गया।

अपराह्न में सभी श्रद्धालुओं ने भण्डारा का प्रसाद ग्रहण कर अपने को कृतार्थ किया।

सूचना

श्री सर्वेश्वरी समूह का स्थापना दिवस समारोह प्रत्येक वर्षों की भाँति इस वर्ष भी 21 सितम्बर 2015 दिन सोमवार को क्रींकुण्ड में कैम्प कार्यालय सर्वेश्वरी समूह द्वारा मनाया जायेगा तथा समस्त शाखाओं में स्थापना दिवस सोल्लास मनाया जायेगा। साथ ही सभी शाखा कार्यालय के मंत्री महोदय कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट प्रधान कार्यालय बाबा कीनाराम स्थल, वाराणसी को प्रेषित करें।

-व्यवस्थापक, अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान, क्रींकुण्ड, वाराणसी

सूचना

अघोर सेवा मण्डल गिरनार आश्रम के संस्थापक परम पूज्य अवधूत सिंह शाकव राम जी का 14वाँ महानिर्वाण दिवस 18 सितम्बर दिन शुक्रवार को गिरनार आश्रम में हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा।

-सचिव, अघोर सेवा मण्डल, दिलदार नगर, गाजीपुर

सूचना

अवधूत भगवान राम पी0जी0 कालेज, अनपरा, सोनभद्र का 25वाँ वार्षिकोत्सव एवं रजत जयंती समारोह 20 सितम्बर 2015 दिन रविवार को सोल्लास मनाया जायेगा।

-सचिव, अवधूत भगवान राम पी0जी0 कालेज, अनपरा, सोनभद्र

सूचना

अघोराचार्य महाराजश्री बाबा कीनाराम जी का 416वाँ लोलार्क षष्ठी पर्व 19 सितम्बर 2015, दिन शनिवार को अघोरपीठ बाबा कीनाराम स्थली में मनाया जायेगा।

-व्यवस्थापक, अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान, क्रींकुण्ड, वाराणसी

अपने घर की तरह समूह परिवार में पूरा विश्वास दें संगठित हों

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्म बन्धुओं!

आज हम लोगों की पारिवारिक गोष्ठी है। जैसे अपने घर में, बन्धु-बान्धव में बातचीत करते हैं, उलझनों को सुलझाने का प्रयास करते है, आपस में कहते सुनते हैं, विचार-विमर्श करते हैं, सोचते हैं आपस में उसी तरह की यह समूह की पारिवारिक गोष्ठी है। और मैं सुबह से जब से आया हूँ, सफलयोनि के पाठ के समय से, बहुत से सदस्य को उस तरह का आचरण न पाकर दुःख हुआ। उनका बड़ा ऊँचा विचार हो गया हो, कभी न मालूम होती हो, उस तरह के आचरण से नुकसान नहीं होने वाला है। आप जितना समय व्यर्थ बैठे-बैठे अपने घर में तास खेलते हैं, दूसरे की आलोचनायें करते हैं, उससे आप अपने को बराबर अस्वस्थ सा पायेंगे। गाँव घर का, परिवार का विश्वास नहीं प्राप्त कर पाते। सोचिये कि जहाँ कुभाषी होते हैं, वहाँ खण्ड-खण्ड, टुकड़े-टुकड़े होने लगता है। आप अपने घर परिवर के साथ बहुत सी भाषायें बोलने लगते हैं तो आप बंट जाते हैं। कुन्जी ताला अलग-अलग होने लगता है परिवार में। आपको शुरू करना है परिवार से ही। अपने परिवार में, कुटुम्ब में एक ही भाषा बोलें, जिससे हमारा संगठन होता है। बाहरी जो व्यवधान या क्षोभ है हम उस पर न पहुँचें। आप अपने विश्वास के कारण जहाँ हैं प्रतिष्ठाओं, अपना एक व्यक्तित्व और प्रतिभा प्राप्त कर सकते हैं।

आप जितना ज्यादा विश्वास दिये हैं, जिस रूप में दिये हैं, उतना ही विश्वास जिस रूप में दिये है, उसी रूप में प्राप्त करेंगे। विश्वास बड़ी चीज है जीवन का। धन न हो, विद्या न हो, बड़ी जाति न हो तब भी जीवन में विश्वास हो तो कहीं भी इस देश के नगर में, बस्ती में, गाँव में लोगों की दृष्टि में आदरणीय व्यक्ति हो सकते हैं, महसूस करेंगे तो आनन्द होगा। कहने का मतलब दो-चार कुटुम्ब, न हो तो अपने बाल बच्चों वहीं से आप शुरू करें। वहीं पर विश्वास नहीं है। उन्हें घर-परिवार के लोग अविश्वासी समझ कर उनका मलिकाव छीन लेते हैं। उनका विश्वास नहीं करते। इस तरह का जो बड़ी एक घोर अपराधमय जीवन बिताने से अच्छा है, जीवन में विश्वास उत्पन्न करें। पशु पक्षी को भी विश्वास देकर, उनका विश्वास प्राप्त करते हैं। अपनी करुणा, भावना अपनी नजदीक स्नेह अपनापन वह सब देता है।

यह एक संस्था है। बहुत से लोग इसमें हैं। दुःख नहीं, क्लेश नहीं होना चाहिये कि हमको अमुक व्यक्ति उस तरह से देखता है, अमुक तरह से सुनता है, आपको ध्यान नहीं देता। क्यों ऐसा कहता सुनता है? अपनी कमजोरी है, जिससे ऐसा देखता है। यह हमारी कमजोरी है जिससे ऐसा देखता है, व्यवहार करता है। अपने कमी को देखें। अपने को ठीक करिये। आचरण ठीक करें। बस्ती में, गाँव में, आलोचना करना, किसी के प्रति अस्नेह आचरण हीनता है। उससे दुराव, क्लेश होता है। इस तरह के आचरण से लाभ नहीं होगा। सदस्यों के लिये रुचि अपनावें। अपना विश्वास दें, जिस रूप में हो सके। सफलयोनि के पाठ से, अर्चना, पूजा से आस्तिकता अधिक नहीं होती न तो ज्यादा छोड़कर नास्तिकता जो हैं आयेगी। घर द्वार छोड़ने से ज्यादा आस्तिक नहीं होंगे। वैसे नास्तिक होना भी बुरा नहीं है। इससे अलग होकर, नास्तिक होकर दूसरी व्यवस्था खड़ा करें। वह भी नहीं कर सकते। परम नास्तिक ईश्वर तुल्य होता है। वेदों में भी कहा गया है। महान योगी, महात्मा इसी अवस्था में पहुँचते हैं। अपने दृष्टिकोण से नहीं समूह की पृष्ठभूमि में देखें, समझें, सोचें। इसके पृष्ठभूमि में बड़ी विचित्रता सा है। जब आप गहराई से देखेंगे और इसको गुण, कर्म, आचरण में लावेंगे तो जीवन में स्वस्थता पावेंगे। अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष सभी तरह से पूर्ति होगी। यदि इसके (समूह के) पृष्ठभूमि में नहीं देखेंगे तो असंतुष्ट, अस्वस्थ और अपने को निरर्थक सोचेंगे।

अनुरोध करूंगा कि अपने छोटे परिवार में जिस प्रकार विश्वास देते हैं संगठित होईये और अपना पूरा विश्वास दिलाईये। उस विश्वास प्राप्त करने का तरीका क्या है, पहलू क्या होगा, सोच-विचार कर आप जिस तरीके से, कड़ी से जितना विश्वास देंगे, उतना ही समझेंगे। सभी अंगों को, पहलुओं को नहीं समझ पायेंगे। पूरे अंगों को समझने में, सम्पूर्ण अनुभव के पृष्ठभूमि में पवित्रता को देखना है, गुणों को आचरण में ले आना है, तो आप स्वस्थचित्त होकर अपनावें, करें। हर तरह से लाभ आपके देश में, ग्राम में होगा। विश्वास प्राप्त कर एक बड़े से बड़े प्रतिभाशाली व्यक्तित्व प्राप्त करेंगे। उत्साह आयेगा, खुशियाँ आयेगी। व्यक्तित्व प्रतिभा का जो गुण है, धर्म है, उससे इस देश का बहुत कुछ कल्याण करेंगे। अपना भी कल्याण करेंगे और अपने नजदीकी लोगों का भी कल्याण करेंगे और अगर ऐसा नहीं करेंगे, इसे व्यवहार में नहीं लायेंगे तो सिर्फ कहने सुनने मात्र रह जायेगा। उससे बैठे बैठे आलोचना की दृष्टि, कुदृष्टि स्वयं प्राप्त होगी जो संतप्त करेगा, दुःख देगा। और वह शैतान की तरह पीछे लगा रहेगा, जहाँ जायेंगे। जहाँ जायें क्षोभित करेगा। अपने कर्मों पर विश्वास नहीं होगा। जो कुछ करते हैं उस पर भी आप विश्वास नहीं कर पाते हैं? क्या बात है? जो कुछ करते हैं अच्छा या बुरा, निश्चय जो कुछ किये उस पर दृढ़ नहीं रह पाते।

कमजोरी है। आपके भीतर का जो देवता है, वह भी आपसे रुष्ट सा रहता है। तत्पर होइयेगा तो समझ जाइयेगा। यह तत्परता आप इस तत्वों में जो पंच तत्व हैं, क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा इसके पूरे होइयेगा, समाधि चित्त को प्राप्त होइयेगा तो समझ जाइयेगा। परिवार में रहकर भी कर सकते हैं। समाधि चित्त उससे जीव परमार्थ, उपकार दूसरे का भी, अपना भी करता है। अगर अभ्यन्तर के छिपे देवता को ध्यान नहीं देता तो शैतान की तरह चित्त हो जाता है। ठीक से नहीं जानने, समझने देता। स्थिर चित्त से जो कहा हूँ, सोचिये। घटता है, सकेत होता है, अन्तर से बराबर। जो शैतान है, नहीं समझने, जानने, करने देता। तो मैं समझता हूँ आप अपने व्यवहार में लायेंगे लाभ उठायेंगे। स्वस्थ जीवन जो होना चाहिये, बीता सकेंगे। पृथ्वी पर वास्तविक जीवन नहीं होने से विक्षिप्ता तथा परेशान करते रहता है। अधिकतर उलझन में पड़कर जीवन नष्ट करते हैं। सही तरीके से समझ बूझ, स्वस्थ तरीका तभी होगा जब विश्वास, निश्चय कर्मों के माध्यम से देंगे। उचित मूल्य तभी पायेंगे। भगवती से प्रार्थना करता हूँ कि जैसा मनोभाव अभी हैं, जो यदा कदा छूट जाता है, वह बराबर बना रहे।

समूह मेरी औलाद है

धर्म बन्धुओं!

स्थापना दिवस पर सोगड़ा आश्रम, जशपुर में आयोजित सभा में श्रीगुरुदेव ने आशीर्वचन में देते हुए कहा- 'धर्म बंधुओं एवं सज्जनों, आज हम लोगों के समूह का पुनीत दिन है। जहाँ जहाँ इसकी शाखा है वहाँ प्रातः से शाम तक उत्सव मनाया जा रहा होगा। लोग अपनी वन्दना कर रहे होंगे। आप जानते हैं इसकी स्थापना का दिन 21 सितम्बर है। विष नहीं है। यदि विष रहता तो फैलता। यह 21 है जो संस्था के प्रतीक का द्योतक है। हम लोगों का झंडा सफेद है। सितम्बर मास में आकाश स्वच्छन्द और निर्मल रहता है। यह किसी के रंग में नहीं रंगा है। किसी रंग की आवश्यकता नहीं। इसके नीचे सब रंग छिप सकता है। आप जानते हैं तुलसीदास समदर्शी थे, उन्होंने कहा है—

सिया राम मय सब जग जानी।
करउं प्रणाम जोरि जुग पानी॥

एक अवधूत बोले-

सिया राम मय सब जग जानी।
आवहुं हम सब एकैं में सानी॥

इसका समूह समवर्ती है। सहधर्मी उच्च श्रेणी का होता है।

आपने आगे कहा कि यदि कोई किसी को गाली देता है और वह उसे नहीं लेता, छोड़ देता है तो उसी के पास स्वतः चला जाता है। यदि आप अपने जीवन में इस तरह का करते हैं तो उसे छोड़ दें।

अभी आप सबके सामने श्रीराम नगीना सिंह, एडवोकेट ने जो कहा कि समूह एक है, यह गौर देने की वस्तु है। जब आप समता में रहते हैं तब आप में पवित्र गुण एवं विचार का प्रवेश होता है और आप खुशी का अनुभव करते हैं। आज "सफल योनि" का पाठ हुआ। उसमें किसी एक ने कहा भी नहीं है। इसलिये यह हम लोगों का पूजनीय है। अभी आप सब उसे उतना आदर नहीं दिये है। जिस दिन उतना आदर आप देंगे, उतना आदर मिलेगा। आप देखेंगे कि मुहम्मद साहब के कुरान को वे लोग कितना आदर देते हैं। उसका परिणाम यह है कि आज वे दुनिया पर छाये हुए है।

अपने में रंजिस न करें, गिरे हुए लोग कौन हैं? जो अपने रंज हैं जो लोग दूसरों पर दया नहीं करते, आप अपने पर दया नहीं करते तो दूसरों पर भी दया नहीं कर सकते। अपने साथ न्याय करना ही दया है। आपकी जो साधना और संगति है वह बहुत ही गोपनीय होनी चाहिये। सफल योनि का आदर ही दया है जो उसकी शिक्षा सुनता है पर उसे व्यवहार में नहीं लाता, वह अपने साथ दया नहीं करता।

संघ जो है, शक्ति है। जब देवताओं ने एकत्र होकर आराधना किया तब भगवती दुर्गा का प्रादुर्भाव हुआ। जब देवताओं ने अपने अस्त्र समर्पित किये तो वह महाकाल के रूप में परिणित हुई। एक एक करके आप भी मंत्र एकत्र करते हैं। वह भी समूह है। जिस दिन एकत्र होगा, उस दिन वह विराट रूप में हो जायेगा। सज्जनों, जो हम प्रणव करते हैं, उसका भी बहुत महत्व है। प्रणव से ज्योति निकलती है। बाल्यकाल में एक दिन मैं दालान में लेट कर प्रणव कर रहा था कि एक वृक्ष ज्याति के रूप में मेरे सामने आया और उस ज्योति में घर का सब दिखायी दिया। आप सब एकाग्रचित्त होकर नाभी से प्रणव करें, इससे आप सबको बहुत शक्ति मिलेगी।

समूह मेरी औलाद है, यह विस्तृत होकर संविधा का रूप धारण करेगी। आप लोग आगे बढ़िये। कुटुम्ब, परिवार और अपने सहयोगियों को समूह के बारे में बताइये, उन्हें भी आगे बढ़ाइये। इस तरह आप मणि का काम करेंगे। 21 सितम्बर के शुभ अवसर पर अपने साधना, संघ और सफल योनि के लिये प्रार्थना भगवती से करें कि हमारे समूह और दैवी गुणों का सहारा हों।

अघोर सूत्र

☞ **आश्रम में रहकर जो घृणा, ईर्ष्या, द्वेष करता हो, अपनी वाणी और विचार संभाल कर नहीं प्रयोग करता हो और जिसकी प्रवृत्ति दूसरों को आदर-सम्मान न देने की हो, वह महाकृपण की तरह जीवन जीता है।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी